



Dheeraj choksa

25 Jul 1991

01:55 PM

Ahmedabad

Model: Web-MyKundli

Order No: 120352401

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

P. AMAN BHATORE

M10, SAI RAM PLAZA , MANGAL NAGAR , AB ROAD , INDORE (MP)

+91-7049001004

amanbhatore1998@gmail.com

लिंग _____: स्त्रीलिंग
जन्म तिथि _____: 25/07/1991
दिन _____: गुरुवार
जन्म समय _____: 13:55:00 घंटे
इष्ट _____: 19:30:31 घटी
स्थान _____: Ahmedabad
राज्य _____: Gujarat
देश _____: India

अक्षांश _____: 23:03:00 उत्तर
रेखांश _____: 72:40:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: -00:39:20 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 13:15:40 घंटे
वेलान्तर _____: -00:06:29 घंटे
साम्पातिक काल _____: 09:25:52 घंटे
सूर्योदय _____: 06:06:47 घंटे
सूर्यास्त _____: 19:24:30 घंटे
दिनमान _____: 13:17:43 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल) _____: उत्तर
ऋतु _____: वर्षा
सूर्य के अंश _____: 08:10:29 कर्क
लग्न के अंश _____: 22:48:58 तुला

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: तुला - शुक्र
राशि-स्वामी _____: धनु - गुरु
नक्षत्र-चरण _____: पूर्वाषाढ़ा - 3
नक्षत्र स्वामी _____: शुक्र
योग _____: विष्कुम्भ
करण _____: वणिज
गण _____: मनुष्य
योनि _____: वानर
नाड़ी _____: मध्य
वर्ण _____: क्षत्रिय
वश्य _____: मानव
वर्ग _____: मूषक
युँजा _____: अन्त्य
हंसक _____: अग्नि
जन्म नामाक्षर _____: फा-फाल्गुनी
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: ताम्र - ताम्र
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: सिंह

P. AMAN BHATORE

M10, SAI RAM PLAZA , MANGAL NAGAR , AB ROAD , INDORE (MP)

+91-7049001004

amanbhatore1998@gmail.com

पंचांग

दादा का नाम _____ :
पिता का नाम _____ :
माता का नाम _____ :
जाति _____ :
गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1913	श्रावण	3
पंजाबी	संवत : 2048	श्रावण	10
बंगाली	सन् : 1398	श्रावण	8
तमिल	संवत : 2048	आदी	9
केरल	कोल्लम : 1166	कर्कदम	9
नेपाली	संवत : 2048	श्रावण	9
चैत्रादि	संवत : 2048	आषाढ़	शुक्ल 14
कार्तिकादि	संवत : 2048	आषाढ़	शुक्ल 14

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 14
तिथि समाप्ति काल _____ : 21:32:14
जन्म तिथि _____ : 14
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : पूर्वाषाढ़ा
नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 21:55:13 घंटे
जन्म योग _____ : पूर्वाषाढ़ा
सूर्योदय कालीन योग _____ : वैधृति
योग समाप्ति काल _____ : 12:13:50 घंटे
जन्म योग _____ : विष्कुम्भ
सूर्योदय कालीन करण _____ : गर
करण समाप्ति काल _____ : 08:17:05 घंटे
जन्म करण _____ : वणिज
भयात _____ : 47:43:45
भभोग _____ : 67:44:18
भोग्य दशा काल _____ : शुक्र 5 वर्ष 10 मा 30 दि

घात चक्र

मास _____ : श्रावण
तिथि _____ : 3-8-13
दिन _____ : शुक्रवार
नक्षत्र _____ : भरणी
योग _____ : वज्र
करण _____ : तैतिल
प्रहर _____ : 1
वर्ग _____ : मार्जार
लग्न _____ : धनु
सूर्य _____ : तुला
चन्द्र _____ : कन्या
मंगल _____ : वृश्चिक
बुध _____ : सिंह
गुरु _____ : धनु
शुक्र _____ : कुम्भ
शनि _____ : कन्या
राहु _____ : कुम्भ

P. AMAN BHATORE

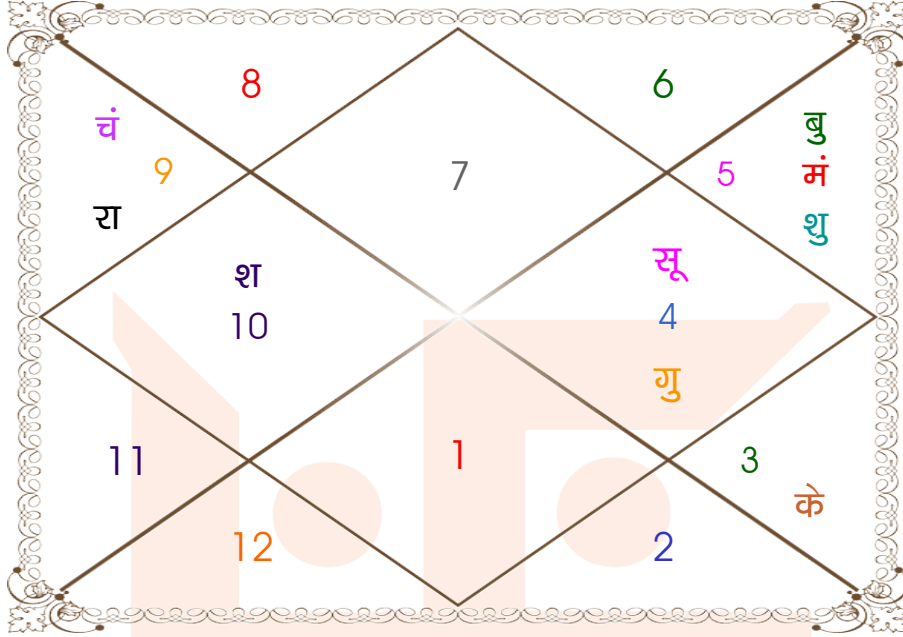
M10, SAI RAM PLAZA , MANGAL NAGAR , AB ROAD , INDORE (MP)

+91-7049001004

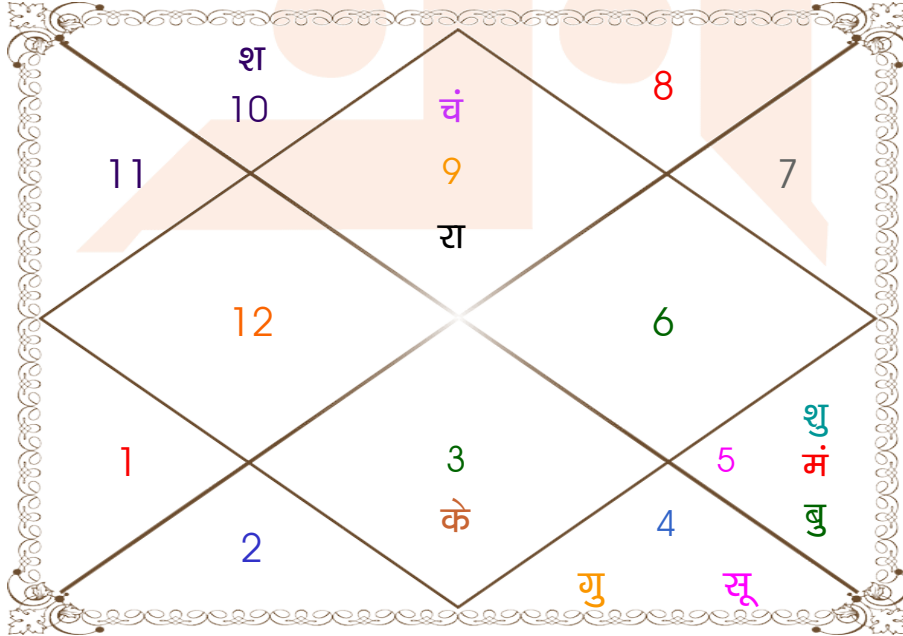
amanbhatore1998@gmail.com

जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



P. AMAN BHATORE

M10, SAI RAM PLAZA , MANGAL NAGAR , AB ROAD , INDORE (MP)

+91-7049001004

amanbhatore1998@gmail.com

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

			के
			गु सू
श			शु मं बु
रा चं		ल	

लग्न कुंडली

के		
गु सू		श
बु मं शु	ल	चं रा

विंशोत्तरी
शुक्र 5वर्ष 10मा 30दि
शुक्र

25/07/1991

24/06/2097

शुक्र	24/06/1997
सूर्य	24/06/2003
चन्द्र	24/06/2013
मंगल	24/06/2020
राहु	24/06/2038
गुरु	24/06/2054
शनि	24/06/2073
बुध	24/06/2090
केतु	24/06/2097

योगिनी
सिद्धा 2वर्ष 0मा 25दि
सिद्धा

20/08/2022

19/08/2029

सिद्धा	30/12/2023
संकटा	20/07/2025
मंगला	29/09/2025
पिंगला	18/02/2026
धान्या	19/09/2026
भ्रामरी	30/06/2027
भद्रिका	19/06/2028
उल्का	19/08/2029

P. AMAN BHATORE

M10, SAI RAM PLAZA , MANGAL NAGAR , AB ROAD , INDORE (MP)

+91-7049001004

amanbhatore1998@gmail.com

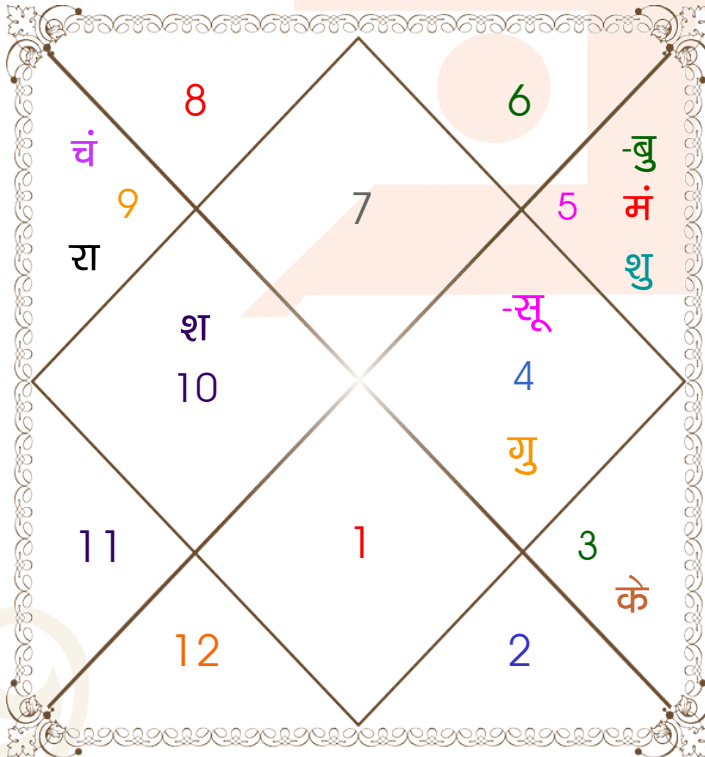
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व अ राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न	तुला	22:48:58	318:04:23	विशाखा	1	16	शुक्र	गुरु	शनि	---
सूर्य	कर्क	08:10:29	00:57:17	पुष्य	2	8	चंद्र	शनि	शुक्र	मित्र राशि
चंद्र	धनु	22:43:21	11:49:05	पूर्वाषाढ़ा	3	20	गुरु	शुक्र	शनि	सम राशि
मंगल	सिंह	12:19:08	00:37:11	मघा	4	10	सूर्य	केतु	बुध	मित्र राशि
बुध	सिंह	05:10:45	00:56:05	मघा	2	10	सूर्य	केतु	मंगल	मित्र राशि
गुरु	कर्क	25:38:51	00:12:49	आश्लेषा	3	9	चंद्र	बुध	राहु	उच्च राशि
शुक्र	सिंह	12:39:20	00:15:14	मघा	4	10	सूर्य	केतु	बुध	शत्रु राशि
शनि	व	मक	09:53:15	उत्तराषाढ़ा	4	21	शनि	सूर्य	शुक्र	स्वराशि
राहु	धनु	25:14:30	00:00:08	पूर्वाषाढ़ा	4	20	गुरु	शुक्र	बुध	नीच राशि
केतु	मिथु	25:14:30	00:00:08	पुनर्वसु	2	7	बुध	गुरु	बुध	नीच राशि
हर्ष	व	धनु	17:15:30	पूर्वाषाढ़ा	2	20	गुरु	शुक्र	चंद्र	---
नेप	व	धनु	21:10:34	पूर्वाषाढ़ा	3	20	गुरु	शुक्र	गुरु	---
प्लूटो	व	तुला	23:49:23	विशाखा	2	16	शुक्र	गुरु	शनि	---
दशम भाव	कर्क	25:17:59	--	आश्लेषा	--	9	चंद्र	बुध	राहु	--

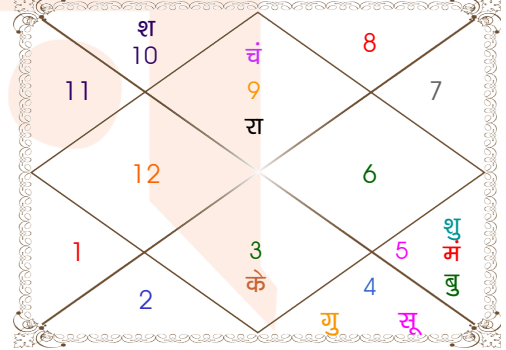
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:44:39

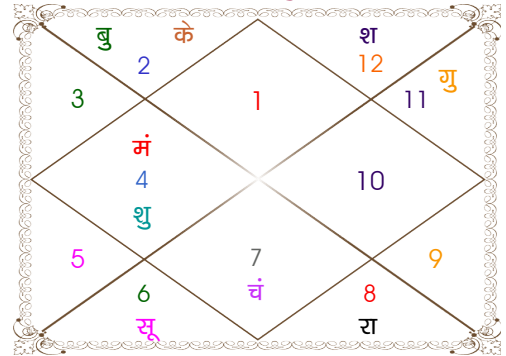
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



P. AMAN BHATORE

M10, SAI RAM PLAZA , MANGAL NAGAR , AB ROAD , INDORE (MP)

+91-7049001004

amanbhatore1998@gmail.com

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	तुला 08:13:49	तुला 22:48:58
2	वृश्चिक 08:13:49	वृश्चिक 23:38:39
3	धनु 09:03:29	धनु 24:28:19
4	मकर 09:53:09	मकर 25:17:59
5	कुम्भ 09:53:09	कुम्भ 24:28:19
6	मीन 09:03:29	मीन 23:38:39
7	मेष 08:13:49	मेष 22:48:58
8	वृष 08:13:49	वृष 23:38:39
9	मिथुन 09:03:29	मिथुन 24:28:19
10	कर्क 09:53:09	कर्क 25:17:59
11	सिंह 09:53:09	सिंह 24:28:19
12	कन्या 09:03:29	कन्या 23:38:39

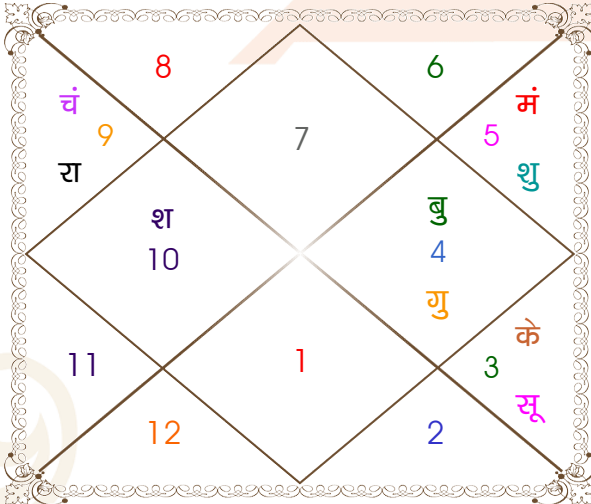
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	तुला 22:48:58	
2	वृश्चिक 22:06:30	
3	धनु 22:57:04	
4	मकर 25:17:59	
5	कुम्भ 27:30:21	
6	मीन 26:59:37	
7	मेष 22:48:58	
8	वृष 22:06:30	
9	मिथुन 22:57:04	
10	कर्क 25:17:59	
11	सिंह 27:30:21	
12	कन्या 26:59:37	

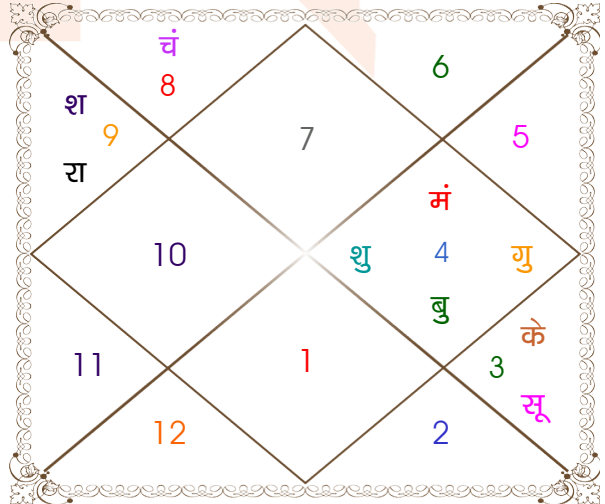
तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी
भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा
पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल

चलित कुंडली



भाव कुंडली



P. AMAN BHATORE

M10, SAI RAM PLAZA , MANGAL NAGAR , AB ROAD , INDORE (MP)

+91-7049001004

amanbhatore1998@gmail.com

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : शुक्र 5 वर्ष 10 मास 30 दिन

शुक्र 20 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष	चंद्र 10 वर्ष	मंगल 7 वर्ष	राहु 18 वर्ष
25/07/1991	24/06/1997	24/06/2003	24/06/2013	24/06/2020
24/06/1997	24/06/2003	24/06/2013	24/06/2020	24/06/2038
00/00/0000	सूर्य 12/10/1997	चंद्र 24/04/2004	मंगल 20/11/2013	राहु 07/03/2023
00/00/0000	चंद्र 12/04/1998	मंगल 23/11/2004	राहु 09/12/2014	गुरु 30/07/2025
00/00/0000	मंगल 18/08/1998	राहु 25/05/2006	गुरु 15/11/2015	शनि 05/06/2028
00/00/0000	राहु 13/07/1999	गुरु 24/09/2007	शनि 23/12/2016	बुध 24/12/2030
00/00/0000	गुरु 30/04/2000	शनि 24/04/2009	बुध 21/12/2017	केतु 11/01/2032
25/07/1991	शनि 12/04/2001	बुध 24/09/2010	केतु 19/05/2018	शुक्र 11/01/2035
शनि 24/06/1993	बुध 16/02/2002	केतु 25/04/2011	शुक्र 19/07/2019	सूर्य 06/12/2035
बुध 24/04/1996	केतु 24/06/2002	शुक्र 23/12/2012	सूर्य 24/11/2019	चंद्र 06/06/2037
केतु 24/06/1997	शुक्र 24/06/2003	सूर्य 24/06/2013	चंद्र 24/06/2020	मंगल 24/06/2038

गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष	बुध 17 वर्ष	केतु 7 वर्ष	शुक्र 20 वर्ष
24/06/2038	24/06/2054	24/06/2073	24/06/2090	24/06/2097
24/06/2054	24/06/2073	24/06/2090	24/06/2097	00/00/0000
गुरु 11/08/2040	शनि 27/06/2057	बुध 21/11/2075	केतु 20/11/2090	शुक्र 24/10/2100
शनि 23/02/2043	बुध 06/03/2060	केतु 17/11/2076	शुक्र 20/01/2092	सूर्य 25/10/2101
बुध 31/05/2045	केतु 15/04/2061	शुक्र 18/09/2079	सूर्य 27/05/2092	चंद्र 25/06/2103
केतु 07/05/2046	शुक्र 15/06/2064	सूर्य 24/07/2080	चंद्र 26/12/2092	मंगल 25/08/2104
शुक्र 05/01/2049	सूर्य 28/05/2065	चंद्र 24/12/2081	मंगल 25/05/2093	राहु 25/08/2107
सूर्य 24/10/2049	चंद्र 27/12/2066	मंगल 21/12/2082	राहु 12/06/2094	गुरु 25/04/2110
चंद्र 23/02/2051	मंगल 05/02/2068	राहु 09/07/2085	गुरु 19/05/2095	शनि 26/07/2111
मंगल 30/01/2052	राहु 12/12/2070	गुरु 15/10/2087	शनि 27/06/2096	00/00/0000
राहु 24/06/2054	गुरु 24/06/2073	शनि 24/06/2090	बुध 24/06/2097	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशों के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल शुक्र 5 वर्ष 10 मा 27 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

P. AMAN BHATORE

M10, SAI RAM PLAZA , MANGAL NAGAR , AB ROAD , INDORE (MP)

+91-7049001004

amanbhatore1998@gmail.com

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

राहु - शनि 30/07/2025 05/06/2028	राहु - बुध 05/06/2028 24/12/2030	राहु - केतु 24/12/2030 11/01/2032	राहु - शुक्र 11/01/2032 11/01/2035	राहु - सूर्य 11/01/2035 06/12/2035
शनि 11/01/2026	बुध 15/10/2028	केतु 15/01/2031	शुक्र 12/07/2032	सूर्य 28/01/2035
बुध 08/06/2026	केतु 09/12/2028	शुक्र 20/03/2031	सूर्य 05/09/2032	चंद्र 24/02/2035
केतु 08/08/2026	शुक्र 13/05/2029	सूर्य 08/04/2031	चंद्र 05/12/2032	मंगल 15/03/2035
शुक्र 28/01/2027	सूर्य 29/06/2029	चंद्र 10/05/2031	मंगल 07/02/2033	राहु 03/05/2035
सूर्य 21/03/2027	चंद्र 14/09/2029	मंगल 02/06/2031	राहु 21/07/2033	गुरु 16/06/2035
चंद्र 16/06/2027	मंगल 07/11/2029	राहु 29/07/2031	गुरु 14/12/2033	शनि 07/08/2035
मंगल 16/08/2027	राहु 27/03/2030	गुरु 18/09/2031	शनि 06/06/2034	बुध 23/09/2035
राहु 19/01/2028	गुरु 29/07/2030	शनि 18/11/2031	बुध 08/11/2034	केतु 12/10/2035
गुरु 05/06/2028	शनि 24/12/2030	बुध 11/01/2032	केतु 11/01/2035	शुक्र 06/12/2035
राहु - चंद्र 06/12/2035 06/06/2037	राहु - मंगल 06/06/2037 24/06/2038	गुरु - गुरु 24/06/2038 11/08/2040	गुरु - शनि 11/08/2040 23/02/2043	गुरु - बुध 23/02/2043 31/05/2045
चंद्र 20/01/2036	मंगल 28/06/2037	गुरु 06/10/2038	शनि 05/01/2041	बुध 20/06/2043
मंगल 21/02/2036	राहु 25/08/2037	शनि 06/02/2039	बुध 16/05/2041	केतु 07/08/2043
राहु 14/05/2036	गुरु 15/10/2037	बुध 28/05/2039	केतु 09/07/2041	शुक्र 23/12/2043
गुरु 26/07/2036	शनि 14/12/2037	केतु 12/07/2039	शुक्र 10/12/2041	सूर्य 03/02/2044
शनि 20/10/2036	बुध 07/02/2038	शुक्र 19/11/2039	सूर्य 25/01/2042	चंद्र 12/04/2044
बुध 06/01/2037	केतु 01/03/2038	सूर्य 28/12/2039	चंद्र 13/04/2042	मंगल 30/05/2044
केतु 07/02/2037	शुक्र 04/05/2038	चंद्र 02/03/2040	मंगल 06/06/2042	राहु 01/10/2044
शुक्र 09/05/2037	सूर्य 23/05/2038	मंगल 17/04/2040	राहु 22/10/2042	गुरु 20/01/2045
सूर्य 06/06/2037	चंद्र 24/06/2038	राहु 11/08/2040	गुरु 23/02/2043	शनि 31/05/2045
गुरु - केतु 31/05/2045 07/05/2046	गुरु - शुक्र 07/05/2046 05/01/2049	गुरु - सूर्य 05/01/2049 24/10/2049	गुरु - चंद्र 24/10/2049 23/02/2051	गुरु - मंगल 23/02/2051 30/01/2052
केतु 20/06/2045	शुक्र 16/10/2046	सूर्य 19/01/2049	चंद्र 03/12/2049	मंगल 15/03/2051
शुक्र 15/08/2045	सूर्य 04/12/2046	चंद्र 12/02/2049	मंगल 01/01/2050	राहु 05/05/2051
सूर्य 01/09/2045	चंद्र 23/02/2047	मंगल 02/03/2049	राहु 15/03/2050	गुरु 19/06/2051
चंद्र 30/09/2045	मंगल 21/04/2047	राहु 14/04/2049	गुरु 19/05/2050	शनि 12/08/2051
मंगल 20/10/2045	राहु 14/09/2047	गुरु 23/05/2049	शनि 04/08/2050	बुध 29/09/2051
राहु 10/12/2045	गुरु 21/01/2048	शनि 09/07/2049	बुध 12/10/2050	केतु 19/10/2051
गुरु 24/01/2046	शनि 24/06/2048	बुध 19/08/2049	केतु 09/11/2050	शुक्र 15/12/2051
शनि 19/03/2046	बुध 09/11/2048	केतु 05/09/2049	शुक्र 29/01/2051	सूर्य 01/01/2052
बुध 07/05/2046	केतु 05/01/2049	शुक्र 24/10/2049	सूर्य 23/02/2051	चंद्र 30/01/2052

P. AMAN BHATORE

M10, SAI RAM PLAZA , MANGAL NAGAR , AB ROAD , INDORE (MP)

+91-7049001004

amanbhatore1998@gmail.com

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	7
भाग्यांक	7
मित्र अंक	2, 3, 6, 7
शत्रु अंक	4, 5, 8
शुभ वर्ष	25,34,43,52,61
शुभ दिन	शनि, बुध, शुक्र
शुभ ग्रह	शनि, बुध, शुक्र
मित्र राशि	मीन, सिंह
मित्र लग्न	मकर, मिथुन, सिंह
अनुकूल देवता	हनुमान
शुभ रत्न	हीरा
शुभ उपरत्न	जरकिन, ओपल
भाग्य रत्न	पन्ना
शुभ धातु	रजत
शुभ रंग	रजत
शुभ दिशा	दक्षिणपूर्व
शुभ समय	सूर्योदय
दान पदार्थ	मिसरी, दधि, श्वेतचन्दन
दान अन्न	चावल
दान द्रव्य	दूध

P. AMAN BHATORE

M10, SAI RAM PLAZA , MANGAL NAGAR , AB ROAD , INDORE (MP)

+91-7049001004

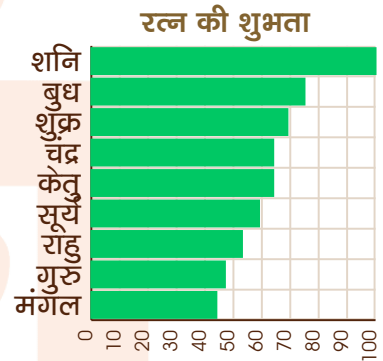
amanbhatore1998@gmail.com

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
नीलम	शनि	100%	सुख, सन्तति सुख
पन्ना	बुध	75%	धनार्जन, भाग्योदय, कम खर्च
हीरा	शुक्र	69%	धनार्जन, दुर्घटना से बचाव, स्वास्थ्य
मोती	चंद्र	64%	पराक्रम, व्यावसायिक उन्नति
लहसुनिया	केतु	64%	भाग्योदय, धनार्जन
माणिक्य	सूर्य	59%	व्यावसायिक उन्नति, धनार्जन
गोमेद	राहु	53%	पराक्रम, व्यावसायिक उन्नति
पुखराज	गुरु	47%	व्यावसायिक हानि, पराक्रम हानि, शत्रु व रोग
मूंगा	मंगल	44%	हानि, दाम्पत्य कष्ट, धन हानि



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
शुक्र	24/06/1997	44%	52%	44%	81%	47%	81%	100%	59%	70%
सूर्य	24/06/2003	72%	70%	53%	75%	55%	56%	90%	31%	52%
चंद्र	24/06/2013	66%	77%	44%	81%	47%	69%	100%	31%	52%
मंगल	24/06/2020	66%	70%	59%	62%	55%	69%	100%	31%	70%
राहु	24/06/2038	44%	52%	19%	75%	47%	75%	100%	66%	52%
गुरु	24/06/2054	66%	70%	53%	62%	61%	56%	100%	53%	64%
शनि	24/06/2073	44%	52%	19%	81%	47%	75%	100%	59%	52%
बुध	24/06/2090	66%	52%	44%	88%	47%	75%	100%	53%	64%
केतु	24/06/2097	44%	52%	53%	75%	47%	75%	90%	31%	77%

P. AMAN BHATORE

M10, SAI RAM PLAZA , MANGAL NAGAR , AB ROAD , INDORE (MP)

+91-7049001004

amanbhatore1998@gmail.com

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

साढ़ेसाती तृतीय ढैया	25/07/1991-05/03/1993 15/10/1993-10/11/1993	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	02/06/1995-10/08/1995 16/02/1996-17/04/1998	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	06/09/2004-13/01/2005 26/05/2005-01/11/2006 10/01/2007-16/07/2007	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	02/11/2014-26/01/2017 21/06/2017-26/10/2017	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	26/01/2017-21/06/2017 26/10/2017-24/01/2020	-----

द्वितीय चक्र:

साढ़ेसाती तृतीय ढैया	24/01/2020-29/04/2022 12/07/2022-17/01/2023	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	29/03/2025-03/06/2027 20/10/2027-23/02/2028	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	13/07/2034-27/08/2036	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	11/12/2043-23/06/2044 30/08/2044-08/12/2046	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	08/12/2046-06/03/2049 10/07/2049-04/12/2049	-----

तृतीय चक्र:

साढ़ेसाती तृतीय ढैया	06/03/2049-10/07/2049 04/12/2049-25/02/2052	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	14/05/2054-02/09/2054 05/02/2055-07/04/2057	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	24/08/2063-06/02/2064 09/05/2064-13/10/2065 03/02/2066-03/07/2066	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	05/02/2073-31/03/2073 23/10/2073-16/01/2076 11/07/2076-11/10/2076	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	16/01/2076-11/07/2076 11/10/2076-15/01/2079	-----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार

साढ़ेसाती तृतीय ढैया
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया
अष्टम स्थानस्थ ढैया
साढ़ेसाती प्रथम ढैया
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया

फल

शुभ
शुभ
सम
अशुभ
शुभ

क्षेत्र

सुख
शत्रु व रोग
व्यावसायिक परेशानी
धन
पराक्रम

P. AMAN BHATORE

M10, SAI RAM PLAZA , MANGAL NAGAR , AB ROAD , INDORE (MP)

+91-7049001004

amanbhatore1998@gmail.com

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

P. AMAN BHATORE

M10, SAI RAM PLAZA , MANGAL NAGAR , AB ROAD , INDORE (MP)

+91-7049001004

amanbhatore1998@gmail.com

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए। जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति एकादश भाव में है। यह भाव आय समृद्धि आदि का प्रतिनिधि भाव है। अतः इसके प्रभाव से आपकी आर्थिक स्थिति उत्तम रहेगी तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित होता रहेगा। साथ ही आपके आय स्रोत भी एक से अधिक रहेंगे। जिससे धनऐश्वर्य से आप सर्वदा युक्त रहेंगी। जीवन में जमीन जायदाद से भी आपको प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप से नित्य लाभ होता रहेगा तथा इसके कय विकय से भी आप प्रचुर मात्रा में धन अर्जित करने में समर्थ रहेंगी। समाज में आप एक प्रतिष्ठित महिला होंगी। सभी लोग आपको यथोचित मान सम्मान प्रदान करेंगे। इसके साथ ही किसी विशिष्ट सम्मान भी आपको प्राप्ति हो सकती है। इस प्रकार धनऐश्वर्य से युक्त होकर आप अपना जीवन यापन करेंगी।

एकादश भाव से द्वितीय भाव पर चतुर्थ दृष्टि के प्रभाव से आपकी पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि मध्यम रहेगी। यदाकदा पारिवारिक जनों के मध्य मतभेद या तनाव भी उत्पन्न होंगे लेकिन इसका प्रभाव अल्प ही रहेगा। वाणी से भी आप यदा कदा कठोरता का प्रदर्शन करेंगी एवं प्रारंभिक शिक्षा अर्जित करने में भी न्यूनाधिक समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। पंचम भाव पर मंगल की दृष्टि से संतति से आप युक्त रहेगी लेकिन संतति प्राप्ति में किंचित विलम्ब हो सकता है। साथ ही उनसे आपको जीवन में सुख एवं सहयोग भी सामान्य ही प्राप्त होगा। उच्च शिक्षा को आप परिश्रम पूर्वक प्राप्त करेंगी तथा सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी समय समय पर लाभ एवं सहयोग मिलता रहेगा। षष्ठ भाव में मंगल की दृष्टि के प्रभाव से शत्रु वर्ग को पराजित करने में आप समर्थ रहेंगी। साथ ही किसी प्रतियोगी परीक्षा मुकद्दमें या चुनाव आदि में भी आपको सफलता प्राप्त होती रहेगी। लेकिन शरीर में यदा कदा गर्मी या पित आदि से कोई परेशानी हो सकती है। परन्तु इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। साथ ही मामा आदि से भी सुख सहयोग की न्यूनता रहेगी परन्तु आपका सामान्य जीवन सुखी रहेगा।

P. AMAN BHATORE

M10, SAI RAM PLAZA , MANGAL NAGAR , AB ROAD , INDORE (MP)

+91-7049001004

amanbhatore1998@gmail.com

इस प्रकार आप धनऐश्वर्य एवं वैभव से युक्त होकर प्रसन्नता पूर्वक अपना दाम्पत्य जीवन व्यतीत करेंगे तथा यत्न पूर्वक पारिवारिक जनों को आधुनिक सुख सुविधा प्रदान करने के लिए तत्पर रहेगी एवं इसमें आपको सफलता भी मिलेगी। साथ ही पारिवारिक जनों से भी आपको पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा तथा सभी आपसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। अतः आपके परस्पर संबंधों में मधुरता बनी रहेगी।



P. AMAN BHATORE

M10, SAI RAM PLAZA , MANGAL NAGAR , AB ROAD , INDORE (MP)

+91-7049001004

amanbhatore1998@gmail.com

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्ण्यता मिलते रहें।

द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

P. AMAN BHATORE

M10, SAI RAM PLAZA , MANGAL NAGAR , AB ROAD , INDORE (MP)

+91-7049001004

amanbhatore1998@gmail.com

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में वासुकि नामक कालसर्प योग विद्यमान है। लेकिन यह केवल आंशिक रूप में विद्यमान है। फलस्वरूप जातक का वैवाहिक जीवन सामान्य होते हुए कभी दुःखमय हो जाता है। पारिवारिक सदस्यों से किसी समय थोड़ा मनमुटाव हो जाता है। भाई-बहनों से आंशिक रूप में दुःख उठाना पड़ता है। रिश्तेदार थोड़ा बहुत नुकसान पहुँचाते रहते हैं और मित्रगण से भी किसी समय जातक थोड़ी क्षति पाता है। घर में सुख शान्ति का आंशिक अभाव रहता है।

पूजा, पाठ, हवन, दान आदि धर्म कार्य में जातक को विशेष रुचि नहीं रहती है। भाग्योदय होने में आंशिक रूप से बाधाएँ आती हैं तथा नौकरी एवं व्यवसाय के क्षेत्र में किंचित संघर्ष करना पड़ता है और राजकीय सेवा के अवसर भी प्राप्त होते हैं तथा पराक्रम, यश, पद व प्रतिष्ठा के लिए आंशिक संघर्ष करना पड़ता है। जातक विदेश गमन करता है जिसमें थोड़ा बहुत कष्ट झेलना पड़ता है।

इस योग के कारण जातक को शारीरिक रोग-व्याधि समय-समय पर घेर लेती है। जिसमें सामान्य से विशेष खर्च हो जाने के कारण आर्थिक स्थिति नाजुक हो जाती है। कालान्तर में आर्थिक स्थिति सामान्य हो जाती है।

इस योग के कारण जातक कानूनी दस्तावेजों पर भावुकतावश हस्ताक्षर करके आंशिक रूप में नुकसान पाता है और राज्य पक्ष से भी जातक को अल्पमात्रा में प्रतिकूल फल प्राप्त होता है और नौकरी व्यवसाय में निलम्बित होने का भय बना रहता है। लेकिन सब कुछ होने के बाद भी जातक अपने जीवन में बहुत सफलता प्राप्त करता है। विलम्ब से उत्तम भाग्य का निर्माण भी होता है और उन्नति के कई अवसर प्राप्त होते हैं।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें। अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. ॐ नमः शिवाय' का प्रतिदिन 108 बार जप करें। कुल जप संख्या- 21000।
3. ताम्बे के लोटे में नाग के जोड़े बहते पानी में एक बार प्रवाहित करें।
4. नवनाग स्तोत्र का एक वर्ष तक प्रतिदिन पाठ करें।
5. राहु के महादशा, अन्तर्दशा आने पर राहु मन्त्र के जाप कम से कम प्रतिदिन 108 बार करें। जप संख्या अद्वारह हजार (18000) है।
6. शुभ मुहूर्त में अभिमन्त्रित गोमेद धारण करें।
7. श्रावणमास में 30 दिन तक महादेव का अभिषेक करें।

P. AMAN BHATORE

M10, SAI RAM PLAZA , MANGAL NAGAR , AB ROAD , INDORE (MP)

+91-7049001004

amanbhatore1998@gmail.com

8. सरस्वती जी की एक वर्ष विधिवत उपासना करें।
9. राहु कवच एवं स्तोत्र का पाठ करें।
10. प्रत्येक सोमवार को दही से भगवान शंकर पर - ॐ हर हर महादेव कहते हुए अभिषेक करें। यह केवल 16 सोमवार तक करें।
11. रसोईघर में बैठकर भोजन करें।
12. शुभ मुहूर्त में बहते पानी में कोयला तीन बार प्रवाहित करें।
13. गोमेद, सुवर्ण, तिल, सरसों, नीलवस्त्र, खड्ग, कम्बल, आदि समय-समय पर दान करें।
14. शुभ मुहूर्त में मुख्य द्वार पर चाँदी का स्वस्तिक एवं दोनो ओर धातु से निर्मित नाग चिपका दें।
15. हनुमान चालीसा का 108 बार पाठ करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगैरे।

P. AMAN BHATORE

M10, SAI RAM PLAZA , MANGAL NAGAR , AB ROAD , INDORE (MP)

+91-7049001004

amanbhatore1998@gmail.com

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियाँ अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

P. AMAN BHATORE

M10, SAI RAM PLAZA , MANGAL NAGAR , AB ROAD , INDORE (MP)

+91-7049001004

amanbhatore1998@gmail.com

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

P. AMAN BHATORE

M10, SAI RAM PLAZA , MANGAL NAGAR , AB ROAD , INDORE (MP)

+91-7049001004

amanbhatore1998@gmail.com

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृ का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- नवम् भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है ।

आपकी कुण्डली में बुध के कारण पितृदोष है ।

आपकी कुण्डली में बुध पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला सदस्य द्वारा बच्चों पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ आप बहन, बुआ तथा मौसी की सेवा करके आर्शीवाद लें तथा तोते को हरी मिर्च खिलाकर पिंजड़े से मुक्त कर दें ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है । संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों ।

P. AMAN BHATORE

M10, SAI RAM PLAZA , MANGAL NAGAR , AB ROAD , INDORE (MP)

+91-7049001004

amanbhatore1998@gmail.com

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।



P. AMAN BHATORE

M10, SAI RAM PLAZA , MANGAL NAGAR , AB ROAD , INDORE (MP)

+91-7049001004

amanbhatore1998@gmail.com

ग्रह फल

सूर्य

दशमभाव में सूर्य हो तो जातक-प्रतापी, व्यवसाय कुशल, राजमान्य लब्ध-प्रतिष्ठ, राजमन्त्री, उदार, ऐश्वर्य सम्पन्न एवं लोकमान्य होता है।

कर्कराशि में रवि हो तो जातक कीर्तिमान, लब्धप्रतिष्ठ, कार्यपरायण, चंचल, साम्यवादी, कफरोगी, इतिहासज्ञ एवं परोपकारी होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य दशम भाव में स्थित है अतः पिता की आप प्रिय रहेंगी। उनका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं आयु भी पूर्ण रहेगी। धनैश्वर्य से वे सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन में आपको पूर्ण रूप से आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे। इसके साथ ही आपके आजीविका या व्यापार संबंधी कार्य भी उन्हीं की प्रेरणा एवं सहायता से सम्पन्न होंगे एवं आप इन कार्यों में वांछित सफलता अर्जित कर सकेंगी।

आप भी उनका पूर्ण हार्दिक सम्मान करेंगी एवं उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध प्रायः मधुर ही रहेंगे तथापि यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे। जीवन में आप पिता को अपनी ओर से पूर्ण आर्थिक सहायता प्रदान करेंगी एवं सुख दुःख में सर्वदा उनका सहयोग करेंगी।

चन्द्र

तृतीयभाव में चन्द्रमा हो तो जातक आस्तिक, तपस्वी, प्रसन्नचित्त, कफरोगी, मधुरभाषी प्रेमी, भाईयों और बहिनों का रक्षक, साहसी, विद्वान्, एवं कंजूस होता है।

धनु राशि में चन्द्रमा हो तो जातक वक्त, सुन्दर, शिल्पज्ञ, शत्रुविनाशक उच्च बौद्धिक स्तर वाला, सुखी विवाहित जीवन, विरासत में धन सम्पत्ति पाने वाला, साहित्य के प्रति रुचि का दिखावा करने वाला एवं लेखक होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति तृतीय भाव में विद्यमान है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा एवं किसी भी प्रकार से शारीरिक कष्ट नहीं होगा। आपके प्रति उनके मन में विशेष स्नेह की भावना रहेगी तथा जीवन में सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको निश्छल भाव से सहयोग प्रदान करेंगी। इसके साथ ही आप में शक्ति, साहस एवं पराक्रम का भाव भी उन्हीं के प्रोत्साहन से जागृत होगा। साथ ही आपको सुन्दर भोजन कराने के लिए भी वे नित्य उत्सुक एवं तत्पर रहेंगी।

आप की भी उनके प्रति विशेष श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रहेगी तथा उनकी बातों से सहमत होकर उनकी आज्ञा का पालन करेंगी। इसके साथ ही जीवन में सर्वप्रकार के तन, मन, धन से उनको सहयोग देने के लिए तत्पर रहेंगी अतः एक दूसरों के लिए आप शुभ एवं अनुकूल रहेंगी।

P. AMAN BHATORE

M10, SAI RAM PLAZA , MANGAL NAGAR , AB ROAD , INDORE (MP)

+91-7049001004

amanbhatore1998@gmail.com

मंगल

ग्यारहवें भाव में मंगल हो तो जातक धैर्यवान्, न्यायवान्, प्रवासी, साहसी, लाभ करने वाला, क्रोधी, झगड़ालू, दम्भी एवं कटुभाषी होता है।

सिंह राशि में मंगल हो तो जातक शूरवीर, सदाचारी, कार्यनिपुण, स्नेहशील, परोपकारी, ज्योतिषी, गणितज्ञ, माता-पिता का आज्ञाकारी, गुरुजनों का आदर करने वाला, उदार एवं सफल होता है।

आपके जन्म समय में मंगल एकादश में विद्यमान है अतः भाई बहिनों से आप स्नेह एवं सम्मान प्राप्त करेंगी एवं जीवन के शुभ एवं महत्वपूर्ण क्षेत्रों में उनसे पूर्ण सहयोग तथा समयानुसार वांछित सहायता भी अर्जित करेंगी। उनका शारीरिक स्वास्थ्य प्रायः अच्छा ही रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक व्याकुलता की भी आपको अनुभूति होगी। आपके आय साधनों की वृद्धि में भी उनका प्रमुख योगदान रहेगा। धन सम्पत्ति से भी वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में सुख दुःख के समय आपकी यथा शक्ति सहायता करने के लिए तत्पर रहेंगे।

आपके अर्न्तमन में उनके प्रति स्नेह भाव रहेगा तथा जीवन में यथाशक्ति उनकी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपनी ओर से वांछित आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगे। आपके आपसी संबंध भी मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण इनमें कटुता का भाव उत्पन्न होगा। परन्तु यह क्षणिक रहेगा। इसके अतिरिक्त आप सुख दुःख में भी अपना योगदान प्रदान करेंगी।

बुध

ग्यारहवें भाव में बुध हो तो जातक ईमानदार, सुन्दर, पुत्रवान्, सरदार, गायनप्रिय, विद्वान्, प्रसिद्ध, धनवान्, सदाचारी, योगी, दीर्घायु, शत्रुनाशक एवं विचारवान् होता है।

सिंह राशि में बुध हो तो जातक मिथ्याभाषी, कुकर्म, ठग, कामुक, भ्रमणशील, अभिमानी, वक्ता, कम उम्र में विवाह, आवेशपूर्ण स्वभाव एवं सरकारी नौकर होता है।

गुरु

दशमभाव में गुरु हो तो जातक सुकर्म करने वाला, प्रसिद्ध और सम्मानित प्रतिष्ठित पद पर आसीन, सदाचारी, पुण्यात्मा, ऐश्वर्यवान्, साधु, चतुर, न्यायी, प्रसन्न, ज्योतिषी, सत्यवादी, शत्रुहन्ता, राजमान्य, स्वतन्त्र विचारक, मातृपितृ भक्त, लाभवान्, धनी एवं भाग्यवान् होता है।

कर्क राशि में गुरु हो तो जातक सदाचारी, विद्वान्, सत्यवक्ता महायशस्वी, साम्यवादी, सुधारक, योगी, लोकमान्य, सुखी, धनी, नेता, कुशाबुद्धि एवं वफादार होता है।

P. AMAN BHATORE

M10, SAI RAM PLAZA , MANGAL NAGAR , AB ROAD , INDORE (MP)

+91-7049001004

amanbhatore1998@gmail.com

शुक्र

ग्यारहवें भाव में शुक्र हो तो जातक परोपकारी, लोकप्रिय, जौहरी, विलासी, वाहनसुखी, स्थिरलक्ष्मीवान्, धनवान् गुणज्ञ, कामी एवं पुत्रवान् होता है।

सिंह राशि में शुक्र हो तो जातक, अल्पसुखी उपकारी, चिन्तातुर, शिल्पज्ञ, स्त्रियों के द्वारा धन अर्जित करने वाला, कामुक, आवेशपूर्ण एवं अपने को दूसरों से ऊँचा समझने वाला होता है।

शनि

चतुर्थभाव में शनि हो तो जातक अपयशी, बलहीन, धूर्त, कपटी, शीघ्रकोपी, कृशदेही, उदासीन, वातपित्तयुक्त एवं भाग्यवान् होता है।

मकर राशि में शनि हो तो जातक कुशा बुद्धि, परिश्रमी, आस्तिक भोगी, मिथ्याभाषी, शिल्पकार, प्रवासी, अच्छा घरेलू जीवन, विद्वान्, सन्देह करनेवाला, बदला लेने वाला एवं दार्शनिक होता है।

राहु

तृतीय भाव में राहु हो तो जातक योगाभ्यासी, विद्वान्, व्यवसायी, पराक्रमशून्य, दृढ़विवेकी, अरिष्टनाशक, प्रवासी, दीर्घायु एवं बलवान् होता है।

धनु राशि में राहु हो तो जातक प्रारम्भिक जीवन में सुखी, दत्तक जाने वाल एवं मित्र द्रोही होता है।

केतु

नवम भाव में केतु हो तो जातक सुखाभिलाषी, व्यर्थपरिश्रमी अपयशी, दुःखी एवं 48 वर्ष के बाद भाग्योदय होता है।

मिथुन राशि में केतु हो तो जातक वायुरोग से पीड़ित, अभिमानी सरलता से सन्तुष्ट होने वाला, अल्पायु एवं छोटी सी बात पर क्रोधित हो जाने वाला होता है।

दशा विश्लेषण

महादशा :- राहु
(24/06/2020 - 24/06/2038)

राहु की महादशा 24/06/2020 को आरम्भ और 24/06/2038 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 18 वर्ष है। आपकी जन्मकुण्डली में राहु तृतीय भाव में स्थित है। इस स्थान से राहु की दृष्टि नवम भाव पर है। इसके पूर्व आपकी 7 वर्ष की मंगल दशा चल रही थी। मंगल के कारण आपको लाभ, कुछ स्वास्थ्य समस्या और विरोधियों व शत्रुओं का विरोध मिला होगा। राहु की वर्तमान दशा में आपको शत्रुओं पर विजय, सम्पत्ति और सौभाग्य की प्राप्ति होगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपको शक्ति तथा स्फूर्ति मिलेगी। किन्तु, मौसम में परिवर्तन के कारण चर्मरोग, दाहक रोग, स्नायविक दुर्बलता और शारीरिक थकावट हो सकती है। इन मामूली रोगों को दोड़ कर आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

अर्थ और व्यवसाय :

इस दशा के दौरान आपकी आर्थिक स्थिति उत्थन्त सुदृढ़ होगी। आपको सम्पत्ति तथा लाभदायक कार्य की प्राप्ति होगी। सट्टे, निवेश में लाभ मिलेगा। नौकरी में भी सुन्दर लाभ मिलेगा। पिता से अथवा परिवार से लाभ मिल सकता है। उच्चाधिकारियों से लाभ की सम्भावना है। जीविका तथा व्यवसाय के लिए तकनीकी और वैज्ञानिक सेवा, राजनीति, कम्प्यूटर विज्ञान, इलेक्ट्रॉनिक, यातायात, कूटनीतिक कार्य आदि का चयन कर सकते हैं। चमड़े के सामान, पत्थर, रत्न, बिजली के उपकरण, दवा, रसायन आदि का व्यापार लाभदायक सिद्ध हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों को लाभ, यश और ख्याति की प्राप्ति होगी तथा जीवन-वृत्ति में प्रगति होगी। व्यवसायियों-व्यापारियों को कुछ उतार-चढ़ाव का सामना करना होगा किन्तु वे अपने रास्ते में आनेवाली सभी बाधाओं का नाश करेंगे। आपकी आय तथा लाभ में वृद्धि होगी और दशा की प्रगति के साथ-साथ व्यापार का विस्तार होगा।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

बुध की अन्तर्दशा में आपको जीवन का सुख मिलेगा। आपके निवास में परिवर्तन हो सकता है अथवा आपको एक मकान की प्राप्ति हो सकती है। आप गाड़ी की खरीद या बिक्री कर सकते हैं। जमीन-जायदाद के मामलों में नुकसान से बचने के लिए आपको सावधान रहना होगा। इस दशा के दौरान आपकी अनेक छोटी यात्राएं होंगी। शुक्र की अन्तर्दशा में दूर की यात्राओं की सम्भावना है।

शिक्षा :

इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा लाभदायक होगी। आप तेज ओर दृढ़प्रतिज्ञ हैं और सभी परीक्षाओं में सफल होंगे। विज्ञान, दवा, रसायन शास्त्र, इन्जीनियरिंग, सरकारी सेवा तथा यातायात के क्षेत्र में आपकी रुचि होगी।

P. AMAN BHATORE

M10, SAI RAM PLAZA , MANGAL NAGAR , AB ROAD , INDORE (MP)

+91-7049001004

amanbhatore1998@gmail.com

परिवार :

परिवार के सदस्यों के साथ आपका सम्बन्ध मधुर रहेगा। आपके बच्चों के लिए यह समय लाभदायक और समृद्धि दायक होगा। आपके जीवनसाथी की दूर की यात्रा और समृद्धि तथा सुन्दर भाग्य की प्राप्ति हो सकती है। आपकी माता की यात्रा, व्यय और धार्मिक कार्यों की ओर उनका झुकाव हो सकता है। आपके पिता को साझेदारों, वाणिज्य-व्यापार और यात्रा से लाभ होगा। आपके छोटे भाई-बहनों को सम्पत्ति तथा समृद्धि की प्राप्ति होगी और उनका निवेश सफल होगा। उनके साथ मधुर सम्बन्ध बनाए रखने के लिए आपको कुछ प्रयास करना होगा।

अन्तर्दशा :

राहु की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के कारण आपकी छोटी यात्रा होगी, सम्बन्धियों से सहायता मिलेगी और आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। गुरु की अन्तर्दशा में जीवन में सफलता मिलेगी। साझेदारों से लाभ होगा और विवाह तथा यात्रा होगी। शनि की अन्तर्दशा के फलस्वरूप परिवर्तन, सौभाग्य की प्राप्ति तथा यात्रा होगी। बुध के कारण यश, ख्याति, सम्पत्ति तथा आनन्द की प्राप्ति होगी। केतु की अन्तर्दशा में कुछ समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं। शुक्र की अन्तर्दशा के दौरान सन्तान से सुख, यात्रा तथा सौभाग्य की प्राप्ति होगी। सूर्य की अन्तर्दशा में छोटी यात्रा, शक्ति और सम्बन्धियों से सहायता मिलेगी। चन्द्र की अन्तर्दशा में लाभ तथा जीवन का सुख मिल सकता है। मंगल की अन्तर्दशा के फलस्वरूप कुछ मामूली स्वास्थ्य समस्या और लाभ प्राप्त हो सकता है।

P. AMAN BHATORE

M10, SAI RAM PLAZA , MANGAL NAGAR , AB ROAD , INDORE (MP)

+91-7049001004

amanbhatore1998@gmail.com

**अंतर्दशा :- राहु - गुरु
(07/03/2023 - 30/07/2025)**

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 24/06/2020 को प्रारंभ होकर 24/06/2038 को समाप्त होगी। इस महादशा में बृहस्पति अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 4 मास 24 दिन रहेगी जो आपके लिए 07/03/2023 को प्रारंभ होकर 30/07/2025 को समाप्त होगी।

बृहस्पति आपकी जन्मपत्री में दशम भाव में स्थित है। दशम भाव सम्मान, जनता, सत्ता, सफलता, पद और साख, दुनियादारी, प्रोन्नति, नियुक्ति, धार्मिक कार्य, सरकार से सम्मान और जांघों का परिचायक है। बृहस्पति शुभ ग्रह है। दशम भाव में स्थित होकर बृहस्पति आपकी कुंडली के 2, 4, 6 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप उच्चपद पर आसीन हो सकते हैं। धनी बनेंगे, धर्म में आस्था होगी। किसी धार्मिक संस्था से संबद्ध हो सकते हैं। धर्मगुरुओं की सहायता करेंगे। विचार और कार्यों में पवित्रता होगी।

शुभत्व में वृद्धि और अरिष्ट से बचाव के लिए 5 रत्ती का पीला पुखराज सोने की अंगूठी में बृहस्पतिवार के दिन प्रातःकाल पूजा-उपासना के बाद कच्चे दूध और गंगाजल से धोकर तर्जनी में धारण करें।

**अंतर्दशा :- राहु - शनि
(30/07/2025 - 05/06/2028)**

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है जो आपके लिए 24/06/2020 को प्रारंभ होकर 24/06/2038 को समाप्त होगी। इस महादशा में शनि अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 10 मास 6 दिन होगी जो आपके लिए 30/07/2025 को प्रारंभ होकर 05/06/2028 को समाप्त होगी।

शनि आपकी जन्मपत्री में चतुर्थ भाव में स्थित है। चतुर्थ भाव माता, स्वयं का मकान, घरेलू वातावरण, व्यक्तिगत संबंध, वाहन, बाग-बगीचे, पैतृक संपत्ति, शिक्षा, दूध, तालाब और झील आदि का प्रतिनिधि है। चतुर्थ भाव में स्थित होकर शनि आपकी कुंडली के 6, 10, 1 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

यह अंतर्दशा आपके लिए अशुभ हो सकती है। इस अवधि में रिश्तेदार आपसे अप्रसन्न रह सकते हैं, आप एकाकी जीवन व्यतीत कर सकते हैं, स्वयं को बीमार या अप्रसन्न महसूस कर सकते हैं। आलस्य की भावना रहेगी, क्रोध अधिक हो सकता है। वात और बलगम से संबंधित रोग हो सकता है। मन में नकारात्मक विचार आ सकते हैं। हर कदम पर सावधान रहना आवश्यक है।

अरिष्ट से बचाव के लिए चांदी में जड़ा नौमुखी रुद्राक्ष शनिवार के दिन शिवजी की

P. AMAN BHATORE

M10, SAI RAM PLAZA , MANGAL NAGAR , AB ROAD , INDORE (MP)

+91-7049001004

amanbhatore1998@gmail.com

पूजा और शनि वैदिक मंत्र के जाप के बाद धारण करें।

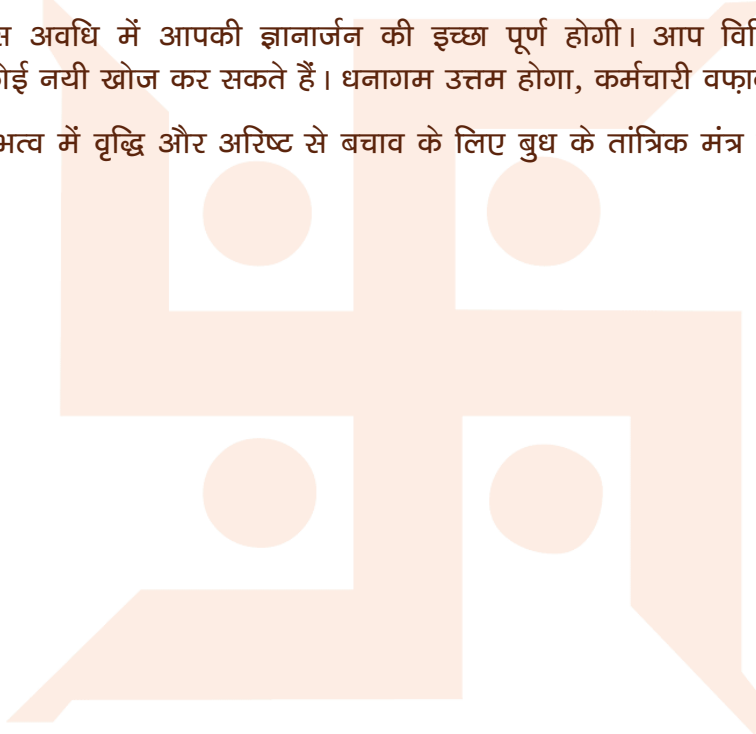
**अंतर्दशा :- राहु - बुध
(05/06/2028 - 24/12/2030)**

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 24/06/2020 को प्रारंभ होकर 24/06/2038 को समाप्त होगी। इस महादशा में बुध अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 6 मास 18 दिन रहेगी जो आपके लिए 05/06/2028 को प्रारंभ होकर 24/12/2030 को समाप्त होगी।

बुध आपकी जन्मपत्री में एकादश भाव में स्थित है। एकादश भाव मित्रगण, समाज, महत्वाकांक्षा, इच्छाएं और उनकी पूर्ति, उद्यम में सफलता, धनलाभ, बड़े भाई, भाग्योदय और टखनों का परिचायक है। एकादश भाव में स्थित होकर बुध कुंडली के पंचम भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसे अपने कारकत्व से प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपकी ज्ञानार्जन की इच्छा पूर्ण होगी। आप विभिन्न विषयों के विद्वान होंगे। कोई नयी खोज कर सकते हैं। धनागम उत्तम होगा, कर्मचारी वफ़ादार रहेंगे।

शुभत्व में वृद्धि और अरिष्ट से बचाव के लिए बुध के तांत्रिक मंत्र के 36000 जाप करें।



P. AMAN BHATORE

M10, SAI RAM PLAZA , MANGAL NAGAR , AB ROAD , INDORE (MP)

+91-7049001004

amanbhatore1998@gmail.com